शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

महादेवी के काव्य में करूणा और वेदना की अभिव्यक्ति

डॉ. इन्दु कुमारी
प्रभारी प्राचार्य
बास्कुपी हाई स्कूल
देवघर, झारखंड, भारत

शोध संक्षेप

महादेवी वर्मा ने वेदना को अपने काव्य का मूल द्रव्य रखा है। उन्होंने वेदना से मैत्री स्थापित की है। दुःख को उन्होंने मधुर भाव के रूप में स्वीकार किया है। उनकी कविता में कुछ खोजते हुए का भाव निरंतर विद्यमान है। उनके काव्य में बुद्ध की करुणा की गहरी छाया दिखाई देती है। प्रस्तुत शोध पत्र में महादेवी के काव्य में करुणा और वेदना के स्वर पर विचार किया गया है।

भूमिका

महादेवी की कविता उनकी आत्मा का सौन्दर्य है और वह अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहती हैं, "सुख-दुःख के धूप-छाँही डोरे से बने हुए जीवन में मुझे केवल दुःख ही गिनते रहना क्यों इतना प्रिय है, यह बहुत लोगों मे आश्चर्य का कारण है। "दुःख महादेवी वर्मा के निकट जीवन का एक ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र मे बाँधे रखने की क्षमता रखता है।"1

महादेवी जी को पीड़ा और करुणा इसलिए प्रिय है, क्योंकि इससे जीवन की साधना पूरी होती है। यह आनंद की चरम अवस्था तक ले जाने का साधन है। विरह में उन्हें आनंद आता है। दुःख वस्तुतः एक बड़ी तीव्र अनुभूति है जो मनुष्य को आत्मोपलब्धि अथवा आत्मासम्प्राप्ति की ओर ले जाती है। दुःख अप्रिय नहीं है, क्योंकि इसका प्रमाण साहित्य स्वयं है। भवभूति ने यह कहकर ' एको रसः करूण एव निमित्त भेदात' 2 कह कर करूण रस को प्रधानता दी है। लांगफेलो ने व्यक्ति के जीवन मे करूणा की आपात की संभावना व्यक्त की है। "Our Sweetest songs are those which tell our saddest thought" महादेवी वर्मा की कविताओ में विविध रूपों में पीड़ा अभिव्यक्त हुई है। कुछ विद्वान इनकी वेदना का कारण भौतिक मानते हैं तो कुछ आध्यत्मिक।3

महादेवी जी के काव्य में करुणा और वेदना

महादेवी वर्मा के काव्य में करूणा की प्रधानता के मुख्यतः निम्न कारण हैं -

अ छायावाद की सामान्य वेदनावादी धारा
आ करूणा का रस पर प्रभाव
इ बौद्ध दर्शन की महाकरूणा का प्रभाव
ई असफल दाम्पत्य और
उ वैयक्तिक रूचि तथा परिवेश।

2. महादेवी वर्मा की करूणा छायावादी कवियों के वेदनावाद से बहुत भिन्न नहीं है। इनकी करूणा और उक्त वेदनावाद में मूलतः दो अन्तर है। एक यह है कि छायावादियों की वेदनानुभूति के पीछे काम करनेवाला 'पराजय की भावना' इनकी करूणा के मूल में नहीं है। इनकी करूणा अनुभूति और दार्शनिक दृष्टियों से प्रेरित है। अतः इसमें छायावाद की अनाविल वास्तविकता

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

का कुछ अभाव है। दूसरे महादेवी की करूणा में उन्नयन का अंश अधिक है। वस्तुतः भावुकता की अधिकता और नारी-हृदय सुलभ पिंजर में ही छायावादियों की वेदना का कीट पलता रहा है। छायावाद को प्रारम्भ में ही यह आरोप सुनना पड़ा कि उनके आँसुओं में से निकलने वाले लोर में ग्लिसरिन की सहायता से गाल भिगोने वाले सिने-सितारों के 'नयन-जल' से अधिक वास्तविकता नहीं है। इस प्रसंग में प्रसाद जी आँसू पर एक ग्रथं लिखकर छायावादियों के आसुओं का 'फ्लडगेट' ही खोल दिया।

जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति-सी छायी
दुर्दिन में आँसू बनकर
आज बरसने आई। (आँसू)

इसका प्रभाव महादेवी पर भी पड़ा। फलस्वरूप ये मधुचक्र में लिपटे भ्रमर की तरह वेदना, करूणा और आँसू मे आमूलचूल डूब गई -

जीवन विरह का जलजात।
वेदना में जन्म करूणा में मिला आवास
अश्रु चुनता दिवस इसका अश्रु गिनती रात। (4)

कुछ विद्वान महादेवी वर्मा की वेदना का कारण भौतिक मानते हैं तो कुछ आध्यात्मिक। महादेवी के वेदना भाव में आध्यत्मिकता ही अधिक है।5 पीड़ा इन्हें सतत् प्रिय है। उनकी पीड़ा मन में इतनी बड़ी है कि साधिका आराध्य में भी उस पीड़ा की खोज करने लगी।

पर शेष नहीं होगी यह, मेरे प्राणों की क्रीड़ा।
तुमको पीड़ा में ढूँढा, तुममें ढूँढूँगी पीड़ा 6

राष्ट्र की विषम परिस्थितियों ने भी छायायुग की करूणा में एक रहस्मयी स्थिति पायी। जैसे परम तत्व से तादाम्य के लिए विकल आत्मा का क्रन्दन व्यापक है। छायावाद करूणा की छाया में सौंदर्य के माध्यम से व्यक्त होनेवाला भावात्मक सर्ववाद ही रहा है और उसी रूप मे उसकी उपयोगिता है।7

इस प्रकार महादेवी वर्मा की करूणा पर भारतीय साहित्य की परम्परा स्वीकृत करूणा का प्रभाव सर्वथा स्पष्ट है।

पर न अब तक व्यथा का छन्द अन्तिम आ चुकी हूँ

महादेवी के काव्य में करूणा की प्रचुरता का एक कारण व्यक्तिगत रूचि और परिवेश के साथ उनका असफल दाम्पत्य भी है। असफल दाम्पत्य ने उनके व्यक्ति एवं और अन्तश्चेतना ही विप्रलम्भ का अधिकरण बना, जिसे कवयित्री ने बौद्धिक आभास से अधिक अभिधात्मक और प्रकट नहीं होने दिया है। यह एक निर्विवाद सत्य है कि व्यक्तिगत जीवन की स्थितियों और परिस्थितियों का कवि की कृतियों पर निश्चितरूप से पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। महादेवी ने भी इसे स्पष्टतः स्वीकार किया है- "देश-काल की सीमा में आबद्ध जीवन न इतना असंग होता है कि इपने परिवेश और परिवेशियों से उसका कोई संघर्ष न हो और यह संघर्ष इतना तरल होता है कि उसके आघातों के चिन्ह शेष न रहे।" 8

महादेवी की करूणा और दुःखवाद पर बौद्ध-दर्शन की करूणा और दुःखवाद का पुष्कल प्रभाव है। बौद्ध दर्शन के कर्मपद्य का मूल और बोधि-प्राप्ति की उत्तरदशा करूणा ही है। महादेवी ने बौद्ध-दर्शन की इस बहु-विचरित करूणा के सामान्य स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है, " बुद्ध होने का प्रयत्न करनेवाला बोधिसत्व है और बोधिसत्व के लिए दो गुण आवश्यक होते हैं - महामैत्री और महाकरूणा। महामैत्री अन्य प्राणियों के लाभ के लिए अपना सर्वस्व त्यागने की शक्ति देती है और महाकरूणा के कारण वह सबको दुःख से विमुक्त करने के लिए प्रयत्नशील रहता है।9

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सान्ध्यगीत में महादेवी जी ने लिखा है -

आज करूणा-स्नात उजला
दुःख ही मेरा पुजारी।10

महादेवी 'दीपशिखा' में आँसुओं के देश में पहुँच जाती हैं। आँसू महादेवी के काव्य का प्राण है और पीड़ा आत्मा। उनके काव्य में वेदना, अभाव, करूणा मूल स्रोत हैं। कवयित्री की रचनाओं में वेदना और दुःख के विविध रूप दृष्टिगोचर होते है। महादेवी ने जीवन की नश्वरता के चित्र भी खींचे हैं।

मै नीर भरी दुख की बदली
विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना
परिचयय इतना इतिहास यदि
उमड़ी कल थी मिट आज चली।11

महादेवी के दुःखवाद की दूसरी विशेषता यह है कि उन्होंने दुःख अथवा विवाद को भी आनन्द की तरह स्थायी या सत्-सदृश मान लिया है। बौद्ध-दर्शन दुःख को एक प्रकार की ऐसी कर्मजन्य विकृति मानता है, जिसका निरोध या शमन सम्भव है अर्थात् दुःख शान्त है। किन्तु महादेवी जी ने अनुसार "आदिम युग से आज तक मनुष्य अपने ह्रदय और बुद्धि का परिष्कार करता आ रहा है, पर इस क्रम में किसी भी बिन्दु पर उसकी मानसिक तथा बौद्धिक वृत्ति का तारतम्य नहीं टूटा। किसी भी युग में मनुष्य जीवन की धोई-पोंछी स्लेट पर अपने अनुभवों की वर्णमाला नहीं आरम्भ करता। मनुष्य के आँसू, हँसी के कारण भिन्न हो सकते हैं, परन्तु उनके मूलतप्त एक ही रहेंगे।12

इस तरह महादेवी दुःख अथवा विवाद को भी आनंद की तरह चिरस्थायी मानती हैं। महादेवी के काव्य में निसशाजन्य विरक्ति भी देखने को मिलती है। संसार की स्वार्थपरता को देखकर कवियत्री को अत्यन्त व्यथा होती है और वह कली के प्रतीत द्वारा संसार को निष्ठुरता का स्मरण कर दुःखी होती हैं -

देकर सौरभ दान पवन से
कहते जब मुस्काये फूल
जिसके पथ मे बिछे वहीं
क्यों भरता इन आँखो में धूल।13

महादेवी की करुणामय भावना में निराशाजन्य अवसाद के साथ सेवा का संकाल्पमय जीवन है और बाधाओं को सहन करने की शक्ति विद्यमान है। अतः वह नीर भरी दुःख की बदली है जो बरसाकर शुष्क संसार को सरस कर देती है और प्रकृति को नवजीवन प्रदान करती है। साथ ही वह अपनी करूणा की तुलना रात्रि से करते हुए यह भी कहती है-

सजनी मै इतनी करूण हूँ
करूण जितनी रात
सजनि मैं इतनी सजल
जितनी सजल बरसात।

वेदना दुखमूलक अवश्य है किन्तु प्रत्येक स्थिति में दुखजनक नहीं होती।

सर्वभूतहितेरताः के कारण भी महादेवी दुःख को अपनाती है, क्योंकि वह कवि का मोदन है। दुख भक्ति और अध्यात्म की ओर उन्मुख होता है। दुःख महादेवी को इसलिए प्रिय है कि इसमें व्यक्ति का अभिमान समाप्त हो जाता है, कलुषता मिट जाती है। महादेवी की वेदना वैयक्तिक है, किन्तु युग की सर्वजनीनता और सार्वदेशिकता की अनन्तता भी उन्हें सहज सम्प्राप्त हो गई है। यह पीड़ा, यह टीस महादेवी के काव्य में स्वयंमेव ही आ गई है। जिसे वे संजोती और सँवारती चलती हैं -

अपने इस सूनेपन की मै हूँ रानी मतवाली
प्राणों का दीप जलाकर करती रहती रखवाली।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

निष्कर्ष

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि महादेवी ने जीवन के सत्य को बताते हुए कहा है कि कुछ समय के लिए आनंदायिनी ही लेकिन मूलत: जीवन दुखों का क्रम है। इसे जीवन दर्शन को अपने काव्य में अभिव्यक्त करनेवाली महादेवी जी की यह वेदना मानवीय चेतना के उच्चतम शिखर को फूटकर बहनेवाली आध्यात्मिक गंगा है जो अलोकिक भावनाओं की शत प्राणों को परिभाषित करती हुई चिर शांत सागर की ओर बराबर प्रवाहित है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 भूमिका - यामा - महादेवी वर्मा
2 सन्धिनी, डॉ. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, पृष्ठ 233
3 महादेवी, इंद्रनाथ मदान, पृष्ठ 146
4 यामा - नीरजा, महादेवी वर्मा, पृष्ठ 62
5 महादेवी का काव्य वैभव, रमेशचन्द्र गुप्त, पृष्ठ 51
6 नीहार, महादेवी वर्मा, पृष्ठ 38
7 महादेवी का विवेचनात्मक गद्य, पृष्ठ 95-100
8 पथ के साथी : दो शब्द
9 पथ के साथी, पृष्ठ 41
10 यामा, सांध्यगीत, पृष्ठ 88
11 यामा, महादेवी वर्मा, पृष्ठ 94
12 क्षणदा, पृष्ठ 67
13 यामा-नीहार, महादेवी वर्मा पृष्ठ 4